

दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों में चित्रित-संवेदना

वैशाली काशिनाथ गायकवाड

शोधार्थी, हिंदी विभाग

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय

औरंगाबाद. मो. नं. 9029920423

दया प्रकाश सिन्हा हिंदी साहित्य में वरिष्ठ नाटककार के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने एक दर्जन से भी अधिक नाटकों की रचना की हैं। वे एक नाटककार के साथ एक निर्देशक और कुशल अभिनेता भी हैं। उनके सभी नाटकों का रंगमंच पर सफल मंचन हुआ है। दया प्रकाश सिन्हा जी ने अपने जीवन के अनुभवों और अनुभूतियों को अपने साहित्य के द्वारा अभिव्यक्त किया है। वे कहते हैं की, "मैंने नाटक कभी फैशन के लिए नहीं लिखा। मैं जो हूँ, जो मेरा परिवेश है, जो मेरे अनुभव सीमा से आबद्ध हैं, उसी को नितांत ईमानदारी से नाटकीय, मुहावरों में उतारने का प्रयत्न किया है। मेरा जन्म गाँव में नहीं हुआ, और न मैं गाँव में पला-बढ़ा। इसलिए मैंने 'गोबर' जैसे किसी पात्र को गढ़ने का प्रयत्न नहीं किया, 'गोदान' जैसी कोई रचना की। बिना 'लमही' के कोई प्रेमचंद नहीं बन सकता। कोशिश करके भी कोई रेणु नहीं बन सकता। मैंने सदैव अपनी सीमा को जाना है।" उन्होंने अपने परिवेश और व्यक्तिगत जीवन से मिले अनुभवों को ही नाटकों के द्वारा अभिव्यक्त किया है।

'कथा एक कंस की' पौराणिक नाटक है। उन्होंने यह नाटक सन १९७४ में लिखा है। कंस को खलनायक माना जाता है। किन्तु उसके कंस बनने के पीछे क्या कारण है, या ऐसी कौन-सी परिस्थितियाँ थी जिसके कारण एक साधारण मनुष्य कंस बन गया है। इन कारणों को सिन्हा जी ने प्रस्तुत किया है। यह नाटक सिर्फ कंस पर केंद्रित नहीं है बल्कि इतिहास काल में जिन व्यक्तियों ने जनता पर शासन करते हुए उनका शोषण किया उन पर केंद्रित है। कंस की तरह स्वेच्छाचारी शासन करने वाला अकबर या हिटलर जैसे व्यक्ति जो अपने आत्मसत्ता का विस्तार करने के लिए अपनी आकांक्षा से पीड़ित ऐसे मार्ग पर चलते हैं जहाँ से वापस लौटना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। स्वयं सिन्हा जी कहते हैं की, "इस नाटक के द्वारा मैंने एक स्वेच्छाचारी शासक के उत्थान-पतन के अतिरिक्त उसकी महत्वाकांक्षा में निहित त्रासदी को पकड़ने की भी चेष्टा की है। यही नाटक की मूल संवेदना है।"

कंस जो की अब महाराज बन गया है। जिसने अपने ही पिता को कारागृह में डाल दिया है। वह स्वयं अपनी स्मृतियों को याद करते हुए स्वयं से पूछता है की, "कहाँ से प्रारंभ होती है यह कथा? एक साधारण मनुष्य की असाधारण महत्वाकांक्षा की कथा। एक साधारण मनुष्य के भगवान बनने की कथा। एक धडकते हृदय के तपते लहू के ठंडे होकर धीरे-धीरे पत्थर की तरह जमने की कथा। तिल-तिल कर, क्षण-क्षण मरने की कथा। जीवित ही मृत्यु-वरन की कथा।" कंस अपने भूतकाल में घटित उन घटनाओं को याद करता है जिसके आघात से वह कभी उभर नहीं सका जिसके परिणाम स्वरूप वह एक स्वेच्छाचारी शासक बन गया है। "हम जन्म से ही कुछ ऐसे हैं। हम सदा से सपने देखते हैं, उस संसार के जिसमें बर्बरता नहीं होगी। सब समान होंगे, मनुष्य में मनुष्य के लिए करुणा होगी, ममता होगी, मेरी एकांत-संगिनी वीणा का संगीत होगा। सुगंध और फूल होंगे।" कोई भी व्यक्ति जन्म से ही दानव नहीं होता है। उसके जीवन में कुछ ऐसे अनुभव उसे मिलते हैं जिससे वह गलत मार्ग पर आगे बढ़ने लगता है। कंस भी एक साधारण व्यक्ति के समान संवेदनशील व्यक्ति था, उसके भी मन में करुणा का भाव था, लेकिन उसके जीवन की ऐसी स्मृतियाँ हैं, जिसे वह कभी नहीं भूला सका। पहला प्रसंग है- कंस के पिता उग्रसेन के मनोरंजन के लिए राजपुरुषों का जमाव बैठा था। वहाँ

एक निरीह बकरा रखा गया था। जो महाबली, महापराक्रमी यादवों के मनोरंजन का एक साधन था। उग्रसेन के आज्ञा देने पर वासुदेव ने उस बकरा के दायीं आखं पर तीर मारकर धनुर्विद्या में निपुणता प्रदर्शित किया, उसके बाद उग्रसेन ने कंस को बकरी की बायीं आखं पर निशाना लगाने के लिए कहाँ, किंतु बकरा की पीड़ा देखकर कंस ने तीर चलाने से इनकार कर दिया, तब उग्रसेन क्रोधित होकर कहते हैं "हम यह जानते थे - (महाराज के स्वर में जैसे तिरस्कार और घृणा की बाढ़ थी) तुम हाथों में स्त्रियों के कंकण पहनकर वीणा बजाओ। ये पुरुषों के खेल तुम्हारे- जैसे स्त्रैण पुरुष के बूते के नहीं। अपमान, लांघन, तिरस्कार, उपहास- (सहसा क्रोध से) मुख, बर्बर, पशु" "राजदरबारों में उपस्थित सभी लोगों के सामने उग्रसेन अपने पुत्र कंस को अपमानित करते हैं। जिससे उनके हृदय में आघात पहुँचता है। बकरी का दर्द देखकर कंस ने पीड़ा ही मद्सूस की थी, उसकी वह पीड़ा देखकर वह उसे और पीड़ित नहीं करना चाहता था, कंस संगीत प्रेमी था। उसे वीणा बजाना अधिक पंसद था। शस्त्र चलाना उसे नापंसद था, उग्रसेन कंस को पूछते हैं की तुम्हें कौनसा हथियार सबसे अधिक प्रिय है? कंस उत्तर में कहता है वीणा, उस पर वे क्रोधित होकर उसे 'स्त्री वेष में पुरुष' कहते हुए तिरस्कृत करते हैं। कंस स्वाती से कहता है की, "पुरुष वही है जो हत्या करे, रक्तपात में हर्षित हो, हिंसा की हुंकार में जीवन-संगीत ढूँढे, निर्मम, क्रूर, बर्बर, अंधा, बहरा- ऐसा होता है पुरुष, (व्याकुलता से) हम ऐसे पुरुष क्यों नहीं हैं? क्यों हमसे दूसरों का दुःख नहीं देखा जाता? क्यों हम दूसरों को कष्ट में देखकर करुणा से भर जाते हैं? क्यों दूसरों की पीड़ा देखकर हमारी आँखों में आँसू आ जाते हैं? क्यों हैं हम ऐसे दुर्बल?" कंस जब पाँच-छह वर्ष का था उस समय उग्रसेन ने उसे कभी डरपोक कहते हुए, कभी भरी सभा में अपनी कटु वाणी से अपमानित करते हुए बार-बार कंस के बाल मन को कई बार प्रताड़ित किया है। जिसके परिणाम स्वरूप कंस एक सामान्य व्यक्ति से असामान्य व्यक्ति बनने के लिए मजबूर हो जाता है। उसके कंस बनने का कारण उसने अपने व्यक्तिगत जीवन में पिता से मिले हुए अपमान, तिरस्कार का विद्रोह है। 'इतिहास-चक्र' ऐतिहासिक कथानक पर आधारित एक युद्ध-विरोधी नाटक है। नाटक के द्वारा सिन्हा जी ने तानाशाही राज में एक शासनकर्ता अपने स्वार्थलोलुपता के कारण किस प्रकार गरीब जनता का शोषण करता है। उनका उपयोग अपनी सत्ता बचाने के लिए करता है, उन्हें बड़े-बड़े आश्वासन देता है परंतु सत्ता मिलने पर उन्हीं का शोषण करता है, इस विंडबना को सिन्हा जी ने व्यक्त किया है। देश में अनामी जैसे गरीब लोगों की स्थिति हमेशा से दयनीय रही है, उन्हें दो वक्त की रोटी भी नहीं मिलती। इन सारी परिस्थितियों का जिम्मेदार वह व्यक्ति है जो स्वयं को तानाशाह घोषित करके सत्ता की आड़ में अपना बैकबैलेंस बढ़ा रहा है और दूसरी ओर जनता का शोषण कर रहा है। उसके कारण देश में भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, कालाबाजार, रिश्वतखोरी, धोखाधड़ी, मंहगाई आदि से जनता परेशान होकर भूखा मर रही हैं, जनता की ये समस्याएँ आज भी समाज में दिखाई देती हैं, इसलिए यह नाटक आज भी प्रासंगिक है।

सूत्रधार : (अनामी के पास जाकर) तुम तो बीमार हो?

अनामी : दो महीने से तबियत खराब है बाबू, हल्के-हल्के खांसी आती थी, अब तो बेदम कर देती है।

सूत्रधार : इसका इलाज क्यों नहीं करते ?

अनामी : इलाज ? **सूत्रधार :** हाँ..

अनामी : बाजार में तो जैसे आग लग गयी है, हर चीज बाबा मोल हैं , ऐसे में पहले पेट भरे कि इलाज करें ? (खांसी का दौरा) पेट भी कहाँ भर पाता है ।

सूत्रधार : इसकी बात समझ में नहीं आती, जिस गति से कुबेर अपना उद्योग साम्राज्य बढ़ा रहा है, जिस गति से राजा का स्विटजरलैंड में बैंक बैलेंस बढ़ रहा है, जिस तरह छोटे बाबू के घर में बड़ा रेफ्रिजरेटर, टीवी कार, एसी, आ रहे हैं, उससे तो यही लगता है कि पश्चिम में दूध और घी की नदियाँ बह रही हैं। फिर इसे दो वक्त का खाना नहीं जूट पाता ? इसकी बात समझ में नहीं आती !” ७ देश की सत्ता पर आसीन सत्ताधारी व्यक्ति सिर्फ अपने स्वार्थ के बारे में ही सोचता हैं, वे और उनसे जुड़े हुए लोग सभी सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन बिताते हैं, परंतु गरीब जनता महंगाई, बीमारी, रिश्तखोरी, बेइमानी से परेशान है। जनता के कल्याण के लिए वे सत्ताधारी बने हैं, परंतु उनकी सहायता करने के बजाय उनकी परेशानियों के कारण बने हुए हैं, “हम राजा है। हम तुम्हें जानते हैं, तुम जनता हो, तुम्हारे कारोड़ों मुँह और करोड़ों हाथ हैं, लेकिन पेट खाली है। तुम्हारे पास धूल है, धूप है, गंदगी है, नंगी है, बीमारी है, मौत है। (अनामी पर एक पैर रख कर) हम इन सबके सामने, हम पश्चिमी देश के राजा वादा करते हैं कि तुम को रोटी देंगे, कपड़ा देंगे, फुल देंगे, सुगंध देंगे, (अनुनय से) तुम मुझे सिर्फ एक चीज दे दो, सिर्फ एक चीज।” ८ इतना सब कुछ जानने के बाद भी जनता की आर्थिक स्थिति सुधारने के बजाय सत्ताधारी लोग अपनी सत्ता बचाने के लिए उनसे सहाय्यता की अपेक्षा करता है।

‘मेरे भाई मेरे दोस्त’ हिंद-मुस्लिम एकता और भारत-पाकिस्तान द्वंद्व के उलझे प्रश्नों से टकराता आज का साहित्यिक नाटक है। इस नाटक के माध्यम से हिंद और मुस्लिम धर्मों के बीच एकता, अपनापन, विश्वास दिखाई देता है। भारत में हिंद और मुस्लिम लोग एक हजार वर्षों से साथ-साथ रह रहे हैं, इन दोनों संप्रदायों को साथ-साथ ही रहना है। इसलिए दोनों संप्रदायों के बीच पारस्परिक सम्मान और स्नेह होना जरूरी है, परंतु पाकिस्तान हिन्दुस्तान को हमेशा से अपना दुश्मन समझता है। वह वहाँ के लोगों के हृदय में भारत के प्रति जहर घोलता आ रहा है। भारत में हिंद-मुस्लिम के बीच दरार डालते हुए उनके बीच झगड़ा लगाना चाहता है। सांप्रदायिक दंगे-फसाद करने के उद्देश्य से यासीन भारत में आता है, यासीन के पिता अनवर और डॉ. मिर्जा बचपन के दोस्त हैं, भारत- पाक की लड़ाई में यासीन के पिता ने देश की रक्षा करते हुए अपने प्राण त्याग दिए थे।

“**किशन :** यह तो बहुत पहले ही करना चाहिए था, अपने देश के लिए हँसते-हँसते सीने पर गोली झेल ले, वह मामूली आदमी नहीं होता , कचहरी में तुम्हारे अब्बा जिस जगह गोली खाकर गिरे थे, वहीं हम लोगों ने आजादी मिलते ही तुम्हारे अब्बा की मूर्ति लगवाई थी।” ९ जब देश का विभाजन हुआ तब कई परिवार भारत देश को छोड़कर पाकिस्तान में जा बसे थे। यासीन भी अपनी चार साल की आयु में अपनी खाला के साथ पाकिस्तान में जा बसा था। अब वह वापस भारत आया है अपने पिता के मित्र मिर्जा के घर जहाँ वह यह देखता है की किशन और मिर्जा दोनों के बीच पारिवारिक संबंध है। जब की उसने यह सुना था की भारत में हिंदू लोग मुस्लिम समुदाय पर अत्याचार करते रहते हैं।

“**किशन :** यासीन बेटे, जैसे डाक्टर भाई का घर तुम्हारा घर है, वैसे मेरा घर भी तुम्हारा घर है।

मिर्जा : हम लोगों के घर के बीच दीवार एक है।

किशन : लेकिन दिलों के बीच दीवार नहीं है।

मिर्जा : हम लोग सौ-डेढ़ सौ साल के पड़ोसी हैं।

किशन : पड़ोसी नहीं एक घर है।

मिर्जा : किशनलाल मेरे सगे भाई की तरह हैं।

किशन : भाई की तरह नहीं, उससे भी बढ़कर हैं, (दोनों एक साथ हँसते हैं) १० देश के प्रति प्रेम का भाव तथा सम्मान का भाव हर एक व्यक्ति में होता है। पाकिस्तान हमेशा से देश का दुश्मन ही रहा है, वहाँ रहने वाले लोगों के हृदय में भारतवासियों के प्रति दुश्मनी का भाव रहा है। ऐसे में यासीन भी जब भारत आता है तो वह देश में दंगे फसाद करने के उद्देश्य से ही आता है। किंतु सच्चाई को जानकर वह अपने आप को पुलिस के हवाले कर देता है।

‘सम्राट अशोक’ एक ऐतिहासिक नाटक है, इसका प्रकाशन सन २०१५ में हुआ है। यह अशोक को केंद्र में रखकर लिखा गया नाटक है , अशोक जो राजा बनने के लिए अपने ही पिता के हत्या का कारण बना है। जिसने राज सिंहासन के लिए अपने भाई सुसीम के साथ चार साल तक युद्ध करके उसकी हत्या कर दी और स्वयं राज सिंहासन पर आसीन हो गया, जब की वह स्थान उसके भाई सुसीम का था। अशोक ने कई युद्ध किए, कई हत्याएँ की है, परंतु जब वह धम्म की शरण में आया तब उसका हृदय परिवर्तित होकर उसमें धम्म के प्रति आस्था, मनुष्यों के प्रति प्रेम, दया, पशुओं के प्रति करुणा, आदि संवेदनाएँ जागृत हो जाती हैं। “देवानामप्रिय राजा प्रियदर्शी ऐसा कहते हैं : संसार में कोई उपहार धर्म- उपहार से बढ़कर नहीं है। कोई दान धर्मदान जैसा नहीं है। कोई मित्र धर्ममित्र जैसा नहीं है। कोई भी संबंध धर्म-संबंध जैसा नहीं है।” ११ अपने शिलालेखों के माध्यम से धर्म की परिभाषा बताते हुए संसार में शांति बनाए रखना चाहता है। जहाँ भोजन के लिए पशुओं की हत्या की जाती थी किंतु धम्म के कारण वे पशु हत्या ना करने का निश्चय करते है। “लिखो शब्दकार -पहले देवानामप्रिय राजा प्रियदर्शी की राज-रसोई में सहस्रों पशुओं का वध भोजन के लिए किया जाता था। अब इस धर्माज्ञा के लिखे जाते समय प्रत्येक दिन केवल दो मोर और एक हिरन भोजन के लिए वध किये जाते हैं। कालांतर में इन तीन पशुओं का भी वध राज-रसोई के लिए नहीं किया जायेगा।” १२ जो अशोक हत्यापात करता था, लोगों को मृत्युदंड देता था, वही अशोक धम्माशोक बनने पर करुणावान बनते दिखाई देता है।

निष्कर्ष:- के रूप में हम कह सकते हैं कि दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों में संवेदना के विविध आयाम पाए जाते हैं। कंस और अशोक दोनों के हृदय में मनुष्य, पशु, प्राणियों, वृक्षों के प्रति सहानुभूति एवं पीड़ा का भाव दिखाई देता है। इतिहास चक्र नाटक में आर्थिक, सामाजिक, राजनितिक संवेदना दिखाई देती हैं। मेरे भाई मेरे दोस्त नाटक के माध्यम से राष्ट्रीय संवेदनाएँ दिखाई देती है, सिन्हा जी के नाटकों में विविध संवेदनाएँ दिखाई देते है।

संदर्भ सूची

१. सिन्हा दया प्रकाश, सीढियाँ, प्रकाशन वर्ष २००८, पृ. क्र. ११-१२
२. सिन्हा दया प्रकाश, कथा एक कंस की, प्रकाशन वर्ष २००८, पृ. क्र. १२-१३
३. वही, वही, पृ. क्र. ३७
४. वही, वही, पृ. क्र. ३९
५. वही, वही, पृ. क्र. ४०
६. वही, वही, पृ. क्र. ३९
७. सिन्हा दया प्रकाश, इतिहास-चक्र, प्रकाशन वर्ष १९७३, पृ. क्र. ३९-४०
८. वही, वही, पृ. क्र. ४७
९. दया प्रकाश सिन्हा, मेरे भाई मेरे दोस्त, प्रकाशन वर्ष २०१५, पृ. क्र. ३९
१०. वही, वही, पृ. क्र. ४०
११. सिन्हा दया प्रकाश, सम्राट अशोक, प्रकाशन वर्ष २०१५, पृ. क्र. ६७-६८
१२. वही, वही, पृ. क्र. ६९